

अ गणेशाय नमः ॥ मुदा वद मुदा वि
कवित्तयदि भा मुद माता कलाला
का मया का मदे वित्त पुन न जति रुद्र के
नि वका नि ॥ २ ॥ त प्राये नि रुद्र मु ति ग
गुणा ए स कला वनि अ वि रो क मा
कुमा भान मसि व अ वात वि
नु वि वि नु भा या इ ति सि रा मु
पा दे वि गो व ॥ ५ ॥ ५ ॥

वृत्तः ॥ प्रश्नः यानिक
कृष्णानिक निम्नः सुरि
निगारा कुपानिक काम

कमारिन् पत्रपनाइयं क
रिक्कं धारिविह्नु विष्णु

राक्षिषाणां चौराश्च मुरिबुद्ध

॥ श्रुत्यणि रमुधाइ ध्या वि
विष्णु वामुदगाणाणां थुमैर
वंगणा रद्वत मातृका ५

॥ गोसिका तो वसमाप त ॥ ५ ॥

श्री राम नारायण वसुदेवा गोविंद
गोविंद गोकोतिदानं प्रहने प्रका
शमकर प्रिया ॥ ४ ॥ कदा
चित्का सिद्धि तद्विव न स गि
त क पर ॥ ५ ॥ मुदा भक्ति नारि
वद ह कमलास्या का द म पु म

॥ २ ॥ २ भासं भुवत्का सुरपति
गणे का स्या क वित पर ॥ ३ ॥ गो गं
॥ ४ ॥ अस्या मिनेय ॥ ५ ॥ अ ग ॥ वि
भव त मे ॥ ६ ॥ दि ए म विर न निश प्रा
ता सिर र वसं तपु ए य रा त का
ला कि र ति ग द्य ता ये भ ज भ वि द
गो वि द्र भ ज म द भ ते प्रा फे स
हि फि ते म र वि ॥ ७ ॥ नमः श्री ग
गणे साय न यात्रा श्री रा र दा दे वि
न म ॥ ८ ॥ प्र न म्मा सिल त र रा वि

न वै लोकादिपतिप्रभुनां
सासं धृतं वसराजवित्तिसमवृथं ॥
वै लोकायादिपतिनस्य विज्या
कप्रभु श्री नारायण तनमस्य
रघोडा वनानासाससपिकास्यत
या वराजवित्तिसुडावतथाख
नन लोया ॥ अथ तैवमिदसास
नरोडास्यतित्ततप्रभुमापद
सविहयकाया कार्या सुप्रायम
॥ ॥ निस्त्रयायेनमनपान थया
सुधलपतयातल सलडावध
मनप्रवमू मसेयवडयसव
करोयु कार्याम कार्या सुप्रायस
यव ॥ तद संप्रवक्षादिन
या ॥ दितवामिय ॥ येतप्रज्ञा
प्रवर्धतमा ॥ ॥ निगातद

के लिये ~~के लिये~~ केशवित्का तिमि
तद्विवित्तमि त क परो मुराये रिता
दिवदनक मला स्वाकुद मधु पोर भास्य
इत्यासुर पतिग रोसा कुद मधु प नगका
थस्वामि तय तप्यगग मि भवतु मेतादित्य
पिर गति सद्य प्राप्ता सिसि वसंत पु ॥
या ता का ता क्रि ति ग च त्या ॥

भज गो विद गो विद भज मुदय ते प्राप्ते स
॥ ६ ॥ हि ते भरणे आद्या म्म सार स्वाति नम स
॥ ७ ॥ वर दे काम रु धि न विद्या रम क रिरवा
सि धि भ वतु मे स फा वा गर था विव स य क्र त

ग ग र थ प्रिति पत्र य ज ग ता धि त रो व दे
पार्थ तिय मे स्वरि सा ते भवतु सु प्रि ता
दे वि सि स्वर वा सि ने उ ग य य त व सा ह
बहु ज या पि सु पति ज य ज पे दि व रा व र सा
रं क्र व वि क से वि क म कृ ता दार वि

[illegible]

धं धा दि धी द्युत वेत्तु न ति जि मि क
 पा तस्य ॥ ॥ ज जा नि जि ज र म स थो धे मि
 मि कर म स ॥ ॥ रु म दि जी जा त जाल
 र ति क ल र ॥ ॥ अ म मि म म क र त व र
 नो डो व म म ॥ ॥ ठ ठा ठि ठी पे ग ता म स व ति
 दि गु ता ॥ ॥ ष षा ठि ठी ० ठि म् प क र ता ता
 स व ति पु ॥ ॥ ड डा डि डी डय ड ला वि से
 वा डो लि डा ह ता ॥ ॥ ध धा धि धी ध ति ध न स
 क र ति पु ध मि ॥ ॥ ए णा णि णी त य गु नि पु
 त म पु से त ग ति ॥ ॥ य पा पि प पा सा ज को
 ह ने धा का र धा नि पु म ॥

कफादि फी कथि

...वाका व्यानियु ॥

कफादि फीफाधिपुक्रुनाताखवनिपु
॥ ॥ ववादिवा विद्याधकिमवाभिहालावे
ति ॥ ॥ मभाभिवाभतोसा नववा निवपुम
रसाति ॥ ॥ ममाभिमीमतेलेवयावयात्रयते
॥ ॥ ललालि वनलि विद्याजितोसाफुलि ॥
ब्रह्म विवि वयानि निवधावयावधि तिनि ॥ ॥ स
सासिसासः स्यातिक लयापयप्रति ॥ ॥
नवासि लमरतस वयनिपु
वितति ॥

सं० ६० विक्रमाद १८२७ सा के १९६९ दि ३० ५२

१ ३२ रे १३ वै ४४ भ ७ शिवा संतः

२ २७ भ १० वि ३७ रा

३ २३ भ ६ ४ ३१ र भ २३ ५

४ १८ के २ आ २५ उभा ८ या

५ ११ भ १३ को १५ म

६ ३ आ ५० को ६ ७

७ ५३ पु ४७ पु ५२ भ २३ रा नी ने भू कः

८ ५० नि ५५ व ४६ भ १० म

९ ५५ भ ५३ भ ५० रा

१० ५२ म ४९ म ३५ र भ १३ उ ने भू के ६१०

११ ५२ पु ४३ पु ३९ व

१२ ५० ५ ४६ पु ३० म

१३ ५५ ६ ४७ पु २० म ५५ ५५

१४ ५७ वि ५२ ६ २७ व भ १७ या

१५ ५० को ५७ व २८ भू वै ने भू भू दि ३१५०

१६ ५५ वि ६० पु २८ रा

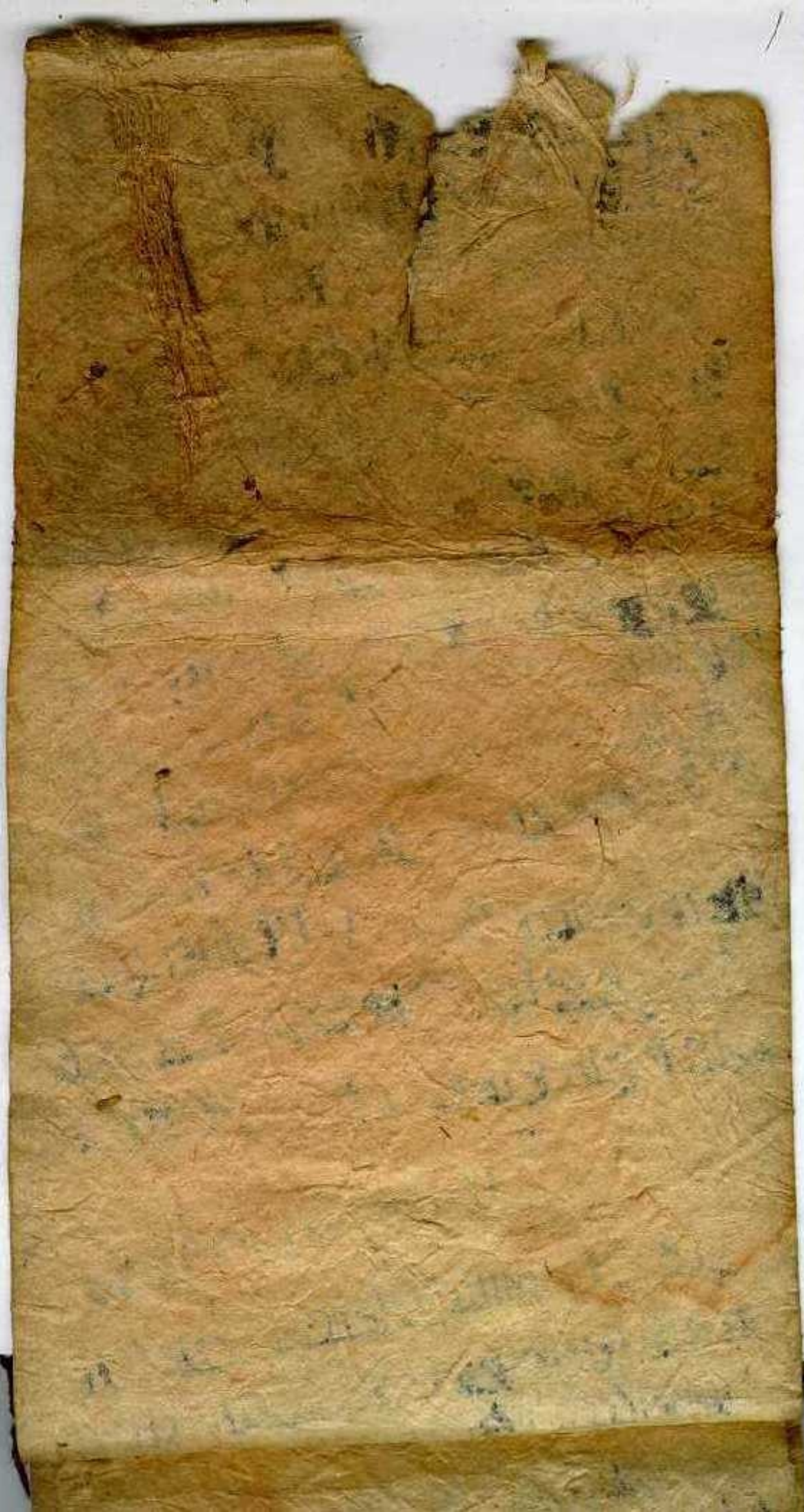
ॐ नमः सारगये ॥ ॥ देवि सुदृश ताम्रसर
सुति ७ णपु र्ण वावरवा त ॥ ॥ सिर स अति
पूर्व मे ति धाम ता सा ति ते ज स मुद्र स मा
त ॥ ॥ कर न क द ल जे ति ज ग म ग पूर्ण
व द स मा न ॥ ॥ ग ल स को षा व र त म शि मा य
को ति अ गि स मा त ॥ ॥ तो यु व रा ति त ति य म म
ति ल य के व ल स त स मा त ॥ ॥ ग ल द्वा य दि क
तो यु व ज ति दि न ज्ञा स त रि त ॥ ॥ प लि स पा
य ल डो क्ति शि र ह ल स स र स मा त ॥ ॥
अ ति त ल य दि त वि रा ज मो ह त सु द र ह
स ग पा क त ॥ ॥ ॥ जे व ल स्या फु लि जे स
जा दि क दि न म्र भ य व र वि व दि न म्र
अ ति त ल य दि न धा ल जे व र ज स व
द को कि ल स मा त ॥ ॥ ॥ न ह म् दि
पा ल द्वा य ल स त ग द्वा य दि क स्या
व ल ॥ ॥ ॥ प द्वा कि ॥ ॥ द्वा र ना ग न
र मु ति शि व ग पा या इ स र रि ता ॥ ॥
व द्वा वि श्वा रा म्भु द्वा दे व ग ण प नि
से ण पू ता पा का त ॥ ॥ वा त ह्नि त के व ल म न
त स्या दि ७ ति स भा व न ॥ ॥

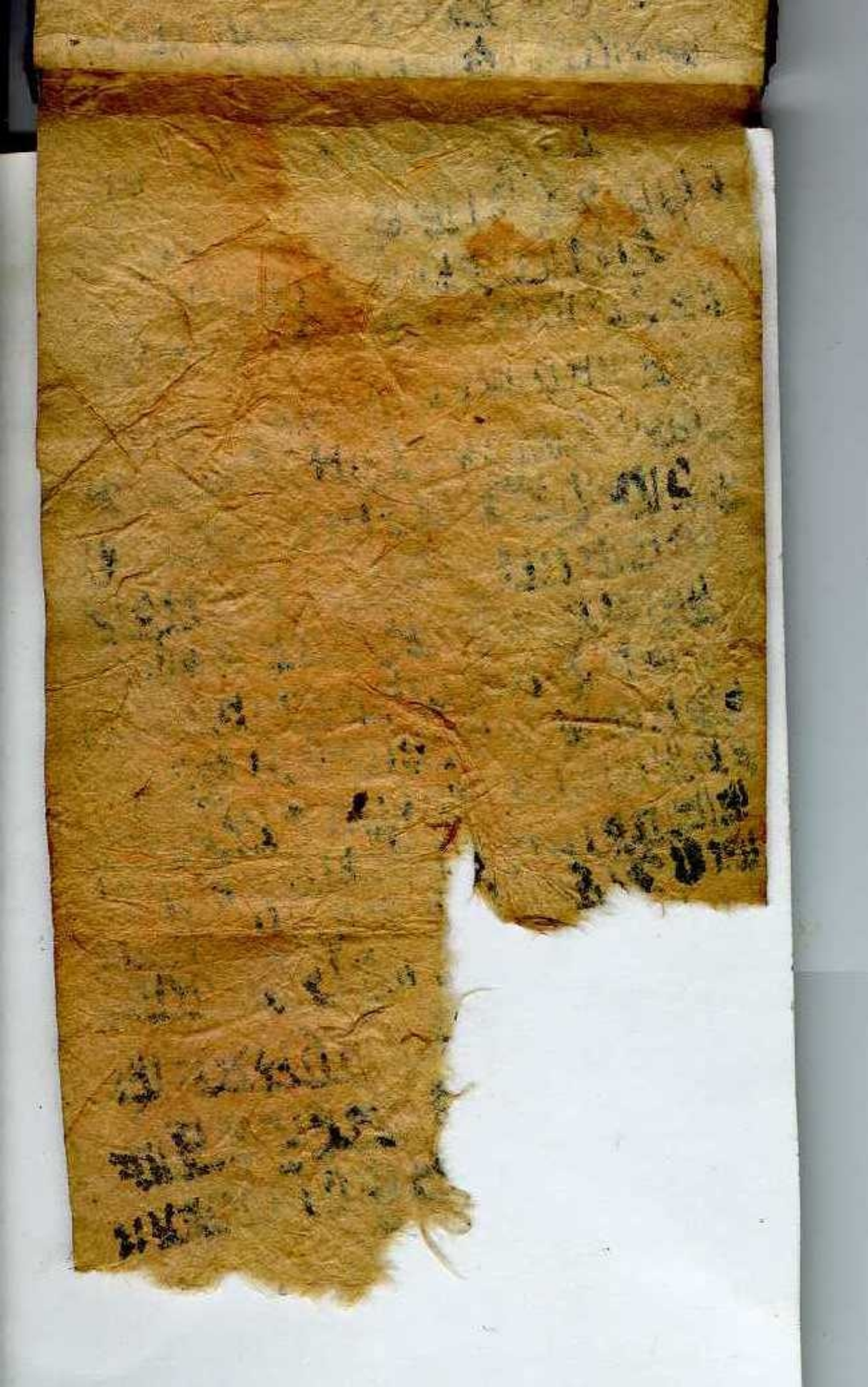
म ते हे द्वा र ते रे वि षा दि न भु ग ति लो
क स म था त ॥ ॥ ॥ त ग म क

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वातकिने केवलमन
तस्यादि ॥ निसिधा वन ॥

पतेहे हस्तर तेरे विद्यादि न भुगलिलो
के समथाने ॥ ॥ ॥ न गलक मलस वासया
वादि न सदा इमनु कया ॥ ॥ ॥ इति
श्री सारदा सौत्रा ॥ ॥

ॐ नमः सारदायै ॥ गवाले माते वया जि
प्र आमस धीमा स्वर व सिल से ने मपु
थापि जिपु क्य ॥ ॥ दल पो ल ग ना
के ता ध के गु या था ॥ २ ॥ गता य पु दू त
पे ल जि मि मि रवा का ॥ ॥ पु जार्थ मि मि
से त नु ग मपु दू को ॥ ॥ न गल स थाने म
प्र म इ जि मि नो ॥ ॥ क लो क दू यो क पा
ला म् र्वा ॥ ॥ त त स ल लो नु यां क धि दा
रा थो ॥ ॥ दू त म् पो ल तो ल ना व ग ना जि पु
मां थ नित स वि या को पा रा क रा क दि
ला नु या ॥ ॥ वे त स नु तित तले का थं
क लामा ॥ ॥ थ स सार स तये म ते मि दू
धा स तया मां ॥ ॥ जि मि नु ग मु न नु क नु
प न मा थो धी ॥ ॥ प्र म्मा सर स नित नु ग





गताया ॥ श्री कंठ
म्या इने धर्मिया
सो जमसपुर्ण ॥

ॐ नमः सारदायै ॥

परस्युति तिमिमा

विद्या जिता सुविद्या ॥

रुता नृस्य वपा

जना जिह

जिह्वा ताथ धिमराधुमा ताथ धे

ता ॥ जिह्वा ताथ धिमराधुमा ताथ धे

तावमया काले जिह्वा अयमास रस्य

ति विद्या जिता पिङ्गति हन पोत्पा नृति

तोतेयया जिह्वा तिह्वा रुताया नृगलसवि

ज्याव के मोलायि ता ॥ राम ताम राम ताम राम ताम

सर सारदादि नस्य पापु काया अनेक प्र

कोर नमस्य कायाया ॥ इकोसा सुविद्या

विवादि नता नृ जिता दि कृपा ता विव

व विज्ञाना ॥ दि गति महा मे सम

शान्तिमहात्म्ये समु

हयं दुमयुक्तं स नै न स

三才圖會

271 100

五

東坡

आर्या

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ १ ॥

॥ वा ॥

म. ३३

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

三

五

...

आमिनाकुसुमसिद्धिचरित्र
रत्नचरणसंग्रहसोपानम् ।

मोरागलकुलपतिविरा

पुनः प्रविष्टः

丁巳仲夏

五

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

उमय

अनेक...
...

有子其

...

मन्त्रि

[illegible]

उद्दि नि ज्ञर

11

अकसः

王

第廿七

83

ਸਲੋਕ

ਜੇ ਸੋ
ਜੇ ਸੋ
ਜੇ ਥੋ ਸੋ
ਜੇ ਥੋ ਸੋ
ਜੇ ਥੋ ਸੋ

ਜੇ
ਜੇ
ਜੇ
ਜੇ
ਜੇ

Handwritten text in a cursive script, likely a historical form of a European language, possibly Italian or Spanish. The text is written on aged, yellowed paper with horizontal ruling lines. The script is dense and flowing, characteristic of early modern handwriting. The text is organized into approximately 15 lines, with some lines starting with a large initial letter. The ink is dark brown or black, and the paper shows signs of wear and discoloration.

Handwritten musical notation on a single page of aged, yellowed paper. The notation is organized into ten horizontal staves, each containing a series of rhythmic symbols and clefs. The symbols are primarily vertical strokes of varying heights, some with horizontal flags or beams, and some resembling stylized letters or numbers. The notation is written in a dark ink, and the paper shows signs of wear, including creases and discoloration. The overall style is characteristic of early printed musical notation, possibly from a 16th or 17th-century manuscript.

स्वस्ति श्री गीर्वाण राजा मन्त्रा मन्त्र
नारायण नारायण नारायण नारायण
नारायण नारायण नारायण नारायण
नारायण नारायण नारायण नारायण
नारायण नारायण नारायण नारायण
नारायण नारायण नारायण नारायण

नारायण नारायण नारायण नारायण
नारायण नारायण नारायण नारायण

नारायण नारायण नारायण नारायण
नारायण नारायण नारायण नारायण
नारायण नारायण नारायण नारायण

नारायण नारायण नारायण नारायण
नारायण नारायण नारायण नारायण
नारायण नारायण नारायण नारायण
नारायण नारायण नारायण नारायण

